INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 2 | MARCH - 2021

वैश्विक संदर्भ में पर्यावरणीय चुनौतियाँ और मानवीय सुरक्षा

डॉ. विजय कुमार
विभाग प्रभारी एवं असि0 प्रोफेसर – प्राचीन इतिहास विभाग,
इन्द्रासन सिंह स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी राजकीय महाविद्यालय, पचवस, बस्ती।

सारांश :–

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में मानवीय सभ्यता के अस्तित्व के समक्ष सबसे गंभीर चुनौती पर्यावरणीय असंतुलन के रूप में उभर कर आई है। प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और विकास की अंधी दौड़ ने न केवल पारिस्थितिकी तंत्र को क्षति पहुँचाई है, बल्कि मानवीय सुरक्षा की अवधारणा को भी संकट में डाल दिया है। मानव सभ्यता के तीव्र विकास, औद्योगीकरण और उपभोक्तावाद की प्रवृत्ति ने प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डाला है, जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरणीय असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हुई है। आज पर्यावरणीय मुद्दे केवल पारिस्थितिकी तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये मानव जीवन की गुणवत्ता, स्वास्थ्य, आजीविका और सुरक्षा से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। जलवायु परिवर्तन और जैव–विविधता का ह्रास सीधे तौर पर मानव जाति के भविष्य को प्रभावित कर रहे हैं। भूमंडलीय तापन (ग्लोबल वार्मिंग) अब केवल एक सिद्धांत नहीं, बल्कि एक कठोर वास्तविकता है, जिसका प्रभाव हमारी खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य और क्षेत्रीय शांति पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। पर्यावरणीय क्षरण का प्रभाव समाज के कमजोर वर्गों पर अधिक पड़ता है, जिससे सामाजिक असमानता और भी गहरी हो जाती है। अतः यह आवश्यक कि पर्यावरणीय समस्याओं को केवल वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि मानवीय सुरक्षा के व्यापक संदर्भ में भी समझा जाए।

पर्यावरणीय चुनौतियाँ मात्र पारिस्थितिक संकट नहीं रह गई हैं, बल्कि मानवीय सुरक्षा की मूलभूत अवधारणा को ही चुनौती दे रही हैं। विकसित और विकासशील देशों दोनों में ये समस्याएँ अब केवल पर्यावरणीय नहीं, अपितु सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक सुरक्षा से भी गहराई से जुड़ चुकी हैं। भारत जैसे विकासशील देश में जनसंख्या वृद्धि, तीव्र शहरीकरण, औद्योगीकरण तथा गरीबी ने पर्यावरणीय गिरावट को और अधिक जटिल बना दिया है। इन चुनौतियों के बीच पारंपरिक ज्ञान, आधुनिक विज्ञान तथा नीति–निर्माण का समन्वय आवश्यक हो गया है। प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं वैश्विक तथा राष्ट्रीय संदर्भों में पर्यावरणीय चुनौतियों और मानवीय सुरक्षा के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करता है। यह प्रयास न केवल समस्याओं की गहराई को समझने का माध्यम है, बल्कि सतत विकास तथा भविष्य की सुरक्षित पृथ्वी के लिए समाधान–उन्मुख दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करता है।

घोषणा :–

प्रस्तुत शोध पत्र लेखक के पूर्व प्रकाशित मूल अंग्रेजी अध्याय "Environmental Challenges and Human Security in a Global Context" का हिंदी अनुवाद है, जो पुस्तक 'Global Environment & Sustainable Development' (ISBN: 978-93-85420-19-1) Year- 2017 में प्रकाशित हो चुका है। यह अनुवादित संस्करण मूल अध्याय की सामग्री, डेटा और निष्कर्षों को बनाए रखते हुए हिंदी भाषा में स्वयं लेखक द्वारा व्यापक जनहित और भाषाई सुलभता हेतु किया गया है।

मुख्य शब्द :– ग्लोबल वार्मिंग, इलेक्ट्रॉनिक कचरा, औद्योगिक अपशिष्ट, बायोस्फियर रिजर्व, इंजीनियर्ड जीन, बायोगैस तथा भू–तापीय ऊर्जा

वर्तमान समय में हम विभिन्न पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। जैसे–जैसे हमारा पर्यावरण बदल रहा है, इसके साथ जुड़ी समस्याओं के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है प्राकृतिक आपदाओं का भारी प्रवाह, गर्मी–ठंड की अवधियाँ, विभिन्न मौसम के समयांतरालों में अन्तर और अनेक अन्य कारक आज हमारे सामने खड़े हैं। भूमंडलीय तापन (ग्लोबल वार्मिंग) हमारे समकालीन जीवन का एक निर्विवाद सत्य बन चुका है। हमारा ग्रह गर्म हो रहा है और निश्चित रूप से हम इस समस्या के प्रमुख कारण हैं। विश्व भर में लोग प्रतिदिन नई–नई चुनौतीपूर्ण पर्यावरणीय समस्याओं से जूझ रहे हैं। इनमें से कुछ समस्याएँ स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करती हैं, जबकि अन्य वैश्विक परिदृश्य को पूरी तरह से बदल रही हैं। वर्तमान पर्यावरणीय समस्याएँ हमें वर्तमान और भविष्य दोनों में आपदाओं तथा त्रासदियों के प्रति अत्यंत असुरक्षित बना रही हैं। वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियाँ – जैसे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, जैव–विविधता का ह्रास, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन तथा पर्यावरणीय एवं स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे, गरीबी के मुद्दों और पारिस्थितिक तंत्रों की स्थिरता से गहराई से जुड़े हुए हैं। इन चुनौतियों को तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है।

प्रमुख पर्यावरणीय चुनौतियाँ

1. बढ़ता प्रदूषण :– प्रदूषण का स्तर प्रत्येक वर्ष बढ़ रहा है, जो प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव डालता है और विकास के लाभों को कम करता है। तेल रिसाव और अम्लीय वर्षा जल प्रदूषण का कारण बनते हैं, जबकि वायु प्रदूषण उद्योगों–कारखानों द्वारा छोड़ी गई गैसों, विषाक्त पदार्थों तथा जीवाश्म ईंधनों के दहन से उत्पन्न होता है। मृदा प्रदूषण मुख्यतः औद्योगिक कचरे से होता है जो मिट्टी को आवश्यक पोषक तत्वों से वंचित कर देता है। भारी धातुएँ, नाइट्रेट तथा प्लास्टिक प्रदूषण के प्रमुख विषाक्त तत्व हैं।

2. अत्यधिक जनसंख्या :– पृथ्वी ग्रह की जनसंख्या अस्थिर स्तर तक पहुँच चुकी है क्योंकि जल, ईंधन और भोजन जैसे संसाधनों की कमी हो रही है। कम विकसित तथा विकासशील देशों में जनसंख्या विस्फोट पहले से दुर्लभ संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव डाल रहा है। भारत को प्रायः "अमीर भूमि किन्तु गरीब लोग" वाला देश कहा जाता है। गरीबी और पर्यावरणीय क्षरण के बीच गहरा संबंध है। खाद्य उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली सघन कृषि, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के माध्यम से पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रही है। लगभग 40 प्रतिशत आबादी अभी भी गरीबी रेखा के नीचे है। पर्यावरणीय गिरावट ने उन गरीबों को सबसे अधिक प्रभावित किया है जो अपने आस–पास के संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। इस प्रकार गरीबी की चुनौती और पर्यावरणीय गिरावट की चुनौती एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

3. विकास और वन :– हमारे वन कार्बन डाइऑक्साइड के प्राकृतिक शोषक हैं, ऑक्सीजन उत्पन्न करते हैं तथा तापमान और वर्षा को नियंत्रित करने में सहायता करते हैं। वर्तमान में वन भूमि का मात्र 30 प्रतिशत भाग ढकते हैं, किन्तु प्रतिवर्ष बढ़ती जनसंख्या की भोजन, आश्रय और वस्त्र की माँग के कारण वृक्ष आवरण तेजी से नष्ट हो रहा है। इससे वन डूब सकते हैं, स्थानीय लोग विस्थापित हो सकते हैं तथा वनस्पतियाँ–जीव–जंतु क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। वन विभाग के आधुनिक ज्ञान एवं कौशल को स्थानीय समुदायों के पारंपरिक ज्ञान व अनुभव के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए। वनों की कटाई का अर्थ केवल हरी आच्छादन को हटाकर उस भूमि को आवासीय, औद्योगिक या वाणिज्यिक उपयोग के लिए उपलब्ध कराना है। वनों के संयुक्त प्रबंधन की रणनीतियाँ सुव्यवस्थित तथा योजनाबद्ध तरीके से विकसित की जानी चाहिए।

4. जलवायु परिवर्तन से वैश्विक तापन :– जलवायु परिवर्तन पिछले कुछ दशकों में उभरी एक अन्य गंभीर पर्यावरणीय समस्या है। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन जैसे मानवीय क्रियाकलाप जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण हैं। इसके अनेक हानिकारक प्रभाव हैं। वैश्विक तापन महासागरों तथा पृथ्वी की सतह के तापमान में वृद्धि करता है, जिससे ध्रुवीय बर्फ टोपियाँ पिघल रही हैं, समुद्र स्तर बढ़ रहा है तथा वर्षा के अस्वाभाविक स्थितियाँ (अचानक बाढ़, अत्यधिक बर्फबारी या मरुस्थलीकरण) उत्पन्न हो रही हैं ।

5. प्राकृतिक संसाधनों का क्षय :– यह भी एक प्रमुख वर्तमान पर्यावरणीय समस्या है। जीवाश्म ईंधनों की खपत ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन का कारण बनती है जो वैश्विक तापन तथा जलवायु परिवर्तन के लिए

जिम्मेदार है। विश्व स्तर पर लोग सौर, पवन, बायोगैस तथा भू–तापीय ऊर्जा जैसे नवीकरणीय स्रोतों की ओर बढ़ रहे हैं। इनकी अवसंरचना स्थापित करने तथा रखरखाव की लागत हाल के वर्षों में काफी कम हो गई है। समुदाय कचरा, औद्योगिक अपशिष्ट, रासायनिक उर्वरक तथा कीटनाशक जैसे कारकों ने सतही जल को प्रदूषित कर दिया है तथा भूजल की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। हमारे नदियों तथा अन्य जलाशयों (झीलों) की जल गुणवत्ता को बहाल करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

6. अपशिष्ट निपटान (वेस्ट डिस्पोजल) :– प्लास्टिक, फास्ट फूड, पैकेजिंग तथा सस्ती वस्तुएँ वर्तमान की एक तत्काल पर्यावरणीय समस्या हैं। प्लास्टिक; इलेक्ट्रॉनिक कचरा उत्पन्न करते हैं जो मानव कल्याण को गंभीर खतरे में डालते हैं। कचरा निपटान एक वैश्विक संकट बन गया है। विकसित देश अत्यधिक मात्रा में कचरा उत्पन्न कर उसे महासागरों तथा कम विकसित देशों में डालने के लिए कुख्यात हैं। परमाणु कचरा निपटान से जुड़े स्वास्थ्य जोखिम अत्यधिक हैं।

7. शहरीकरण के दुष्प्रभाव :– शहरी फैलाव उच्च घनत्व वाले शहरी क्षेत्रों से निम्न घनत्व वाले ग्रामीण क्षेत्रों की ओर जनसंख्या प्रवास को संदर्भित करता है, जिससे शहर ग्रामीण भूमि पर तेजी से फैल रहे हैं। लगभग 27 प्रतिशत भारतीय शहरी क्षेत्रों में रहते हैं तथा शहरी भारतीयों में 30 प्रतिशत से अधिक झुग्गी–झोपड़ीयों में बसते हैं। भारत के 3,245 कस्बों–शहरों में से केवल 21 में आंशिक या पूर्ण सीवरेज तथा उपचार सुविधाएँ उपलब्ध हैं। अतः तीव्र शहरीकरण से निपटना एक बड़ी चुनौती है। शहरी फैलाव भूमि गिरावट, यातायात वृद्धि, पर्यावरणीय समस्याओं तथा स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनता है। भूमि की बढ़ती माँग प्राकृतिक पर्यावरण (वनस्पति तथा जीव–जंतु) को विस्थापित कर रही है, न कि प्रतिस्थापित।

8. अम्ल वर्षा और महासागरीय अम्लीकरण :– अम्ल वर्षा जीवाश्म ईंधनों के दहन, ज्वालामुखी विस्फोट अथवा सड़ती वनस्पति से उत्पन्न सल्फर डाइऑक्साइड तथा नाइट्रोजन ऑक्साइड के कारण होती है। यह मानव स्वास्थ्य, वन्यजीवों तथा जलजीव प्रजातियों पर गंभीर प्रभाव डालती है। इसी प्रकार यह कार्बन–डाई–ऑक्साइड के अत्यधिक उत्पादन का प्रत्यक्ष परिणाम है। मनुष्यों द्वारा उत्पादित कार्बन–डाई–ऑक्साइड का 25 प्रतिशत महासागरों में जा रहा है। पिछले 250 वर्षों में महासागर की अम्लता बढ़ चुकी है, किन्तु 2100 ई0 तक यह 150 प्रतिशत तक बढ़ सकती है। इसका मुख्य प्रभाव शेलफिश तथा प्लैंकटन पर पड़ रहा है, ठीक वैसे ही जैसे मानव ऑस्टियोपोरोसिस।

9. ओजोन परत का क्षय :– वायुमंडल की महत्वपूर्ण ओजोन परत का क्षय क्लोरो–फ्लोरो कार्बनों में पाए जाने वाले क्लोरीन तथा ब्रोमाइड से होने वाले प्रदूषण के कारण है। ये विषाक्त गैसें ऊपरी वायुमंडल में पहुँचकर ओजोन परत में छेद कर देती हैं। सबसे बड़ा छेद एंटार्कटिक के ऊपर है। ओजोन परत ग्रह के चारों ओर सुरक्षा की अदृश्य परत है जो हमें सूर्य की हानिकारक किरणों से बचाती है।

10. आनुवंशिक इंजीनियरिंग :– भोजन का आनुवंशिक संशोधन विषाक्त पदार्थों तथा रोगों में वृद्धि करता है क्योंकि एलर्जी वाले पौधे के जीन लक्षित पौधे में स्थानांतरित हो सकते हैं। आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलें पर्यावरण के लिए गंभीर समस्याएँ पैदा कर सकती हैं क्योंकि इंजीनियर्ड जीन वन्यजीवों के लिए विषैला सिद्ध हो सकता है। कीट प्रतिरोधी पौधे बनाने के लिए विषाक्त पदार्थों का बढ़ता उपयोग परिणामी जीवों को एंटीबायोटिक्स के प्रति प्रतिरोधी बना सकता है।

11. आनुवंशिक विविधता का ह्रास :– वर्तमान में अधिकांश जंगली आनुवंशिक स्टॉक प्रकृति से गायब हो रहे हैं। एशियाई शेर सहित जंगली जीव आनुवंशिक विविधता के ह्रास की समस्या से जूझ रहे हैं। अभयारण्य, राष्ट्रीय उद्यान तथा बायोस्फियर रिजर्व जैसे संरक्षित क्षेत्र नेटवर्क जनसमूहों को अलग–थलग कर रहे हैं, जिससे एक समूह के दूसरे समूह के साथ प्रजनन की संभावना कम हो रही है।

वैश्विक पर्यावरणीय परिवर्तन और मानवीय सुरक्षा के संदर्भ में पर्यावरणीय सुरक्षा पर शोधों का विस्तार तथा मानवीय सुरक्षा को एक अवधारणा व संवाद के रूप में स्थापित होने पर, वैश्विक पर्यावरणीय परिवर्तन तथा मानवीय सुरक्षा के बीच संबंधों की जांच के लिए व्यापक अवसर प्राप्त होता है। पर्यावरणीय चुनौतियाँ वैश्विक स्तर पर खाद्य, ऊर्जा तथा जल सुरक्षा के जोखिमों को बढ़ा सकती हैं। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार, 2050 ई0 तक खाद्य, चारा तथा रेशे की माँग 70 प्रतिशत तक बढ़ सकती है। हाल के वर्षों में वैश्विक खाद्य, जल तथा ऊर्जा प्रणालियों की नाजुकता स्पष्ट हो चुकी है। उदाहरण स्वरूप, प्रति व्यक्ति कृषि योग्य भूमि 1962 ई0 में 0.43 हेक्टेयर से घटकर 1998 ई0 में 0.26 हेक्टेयर रह गई है। अनुमान है कि यदि

कोई प्रमुख नीति परिवर्तन नहीं किया गया तो यह मूल्य 2030 ई0 तक प्रतिवर्ष 1.5 प्रतिशत तक गिरेगा। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार, यदि कोई बड़ा नीति परिवर्तन नहीं हुआ तो अगले 20 वर्षों में वैश्विक ऊर्जा माँग 40 प्रतिशत बढ़ जाएगी। बढ़ती दीर्घकालिक माँग के कारण आगामी वैश्विक ऊर्जा संकट की बार–बार चेतावनी दी गयी है। ऊर्जा दक्षता, नवीकरणीय ऊर्जा तथा नई अवसंरचनाओं में भारी एवं निरंतर निवेश की आवश्यकता है ताकि दीर्घकालीन पर्यावरणीय उद्‌देश्यों के अनुरूप कम–कार्बन, संसाधन–कुशल ऊर्जा प्रणाली में संक्रमण संभव हो सके। एक अनुमान के अनुसार, मात्र 20 वर्षों में वैश्विक जल माँग आज से 40 प्रतिशत अधिक हो सकती है तथा सबसे तेजी से विकासशील देशों में 50 प्रतिशत से भी अधिक। जैव विविधता सम्मेलन के सचिवालय के हालिया अनुमान के अनुसार, विश्व के 60 प्रतिशत से अधिक बड़े नदी तंत्रों का प्रवाह भारी रूप से परिवर्तित हो चुका है। जल उपलब्धता की पारिस्थितिक स्थिरता की सीमाएँ पहुँच चुकी हैं। 2030 ई0 तक विश्व का 50 प्रतिशत भाग उच्च जल तनाव वाले क्षेत्रों में रह सकता है, जबकि 60 प्रतिशत से अधिक भाग अभी भी बेहतर स्वच्छता सुविधाओं से वंचित रह सकता है। बड़े पैमाने पर पर्यावरणीय परिवर्तनों की पहचान लंबे समय से पृथ्वी प्रणाली वैज्ञानिकों का क्षेत्र रही है जो भू–गोल और जैव–गोल के बड़े पैमाने पर अंतर्क्रियाओं का अध्ययन करते हैं।

पर्यावरणीय परिवर्तन वैश्विक, राष्ट्रीय तथा मानवीय सुरक्षा को खतरे में डाल सकते हैं। पर्यावरणीय मुद्‌दों में भूमि गिरावट, जलवायु परिवर्तन, जल की गुणवत्ता व मात्रा तथा प्राकृतिक संसाधन संपत्तियों (तेल, वन, खनिज आदि) का प्रबंधन व वितरण शामिल है। पर्यावरणीय परिवर्तन सीधे संघर्ष तथा गरीबी, प्रवास, छोटे हथियार तथा संक्रामक रोगों जैसे अन्य कारणों में योगदान दे सकते हैं। जलवायु परिवर्तन जल की कमी, प्राकृतिक आपदाएँ, कृषि उत्पादकता में कमी, संक्रामक रोगों की दर व दायरे में वृद्धि तथा मानव प्रवास में बदलाव जैसे भारी शारीरिक व सामाजिक परिवर्तन लाएगा। पर्यावरणीय परिवर्तन पृथ्वी के पर्यावरण में प्राकृतिक तथा मानव–प्रेरित परिवर्तनों को संदर्भित करता है। यह भूमि उपयोग, भूमि आवरण, जैव–विविधता, वायुमंडलीय संरचना तथा जलवायु को प्रभावित करता है। पर्यावरणीय परिवर्तन वैश्विक, राष्ट्रीय तथा मानवीय सुरक्षा को खतरे में डाल सकते हैं। सुरक्षा तथा मानवीय गतिविधि द्वारा उत्पन्न पर्यावरणीय परिवर्तन के बीच संबंध इस प्रकार है – पहला; पर्यावरणीय गिरावट स्वयं मानवीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा है; दूसरा, पर्यावरणीय परिवर्तन हिंसक अंतःराज्यीय तथा अंतरराज्यीय संघर्ष का कारण तथा परिणाम दोनों हो सकता है।

निष्कर्ष और समाधान

भारत में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि, गरीबी, शहरीकरण, औद्योगीकरण तथा संबंधित कारक पर्यावरण की तेजी से गिरावट के लिए जिम्मेदार हैं। देश के कई भागों में पर्यावरणीय समस्याएँ गंभीर हो चुकी हैं और इन्हें नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। वर्तमान पर्यावरणीय समस्याएँ मानव तथा पशु स्वास्थ्य को भारी जोखिम में डाल रही हैं। गंदा जल विश्व का सबसे बड़ा स्वास्थ्य जोखिम है तथा जीवन की गुणवत्ता व सार्वजनिक स्वास्थ्य को खतरे में डालता है। नदियों में अपवाह; विषाक्त पदार्थों, रसायनों तथा रोग वाहक जीवों को साथ ले जाता है। प्रदूषक; अस्थमा जैसे श्वसन रोग तथा हृदय–वैस्कुलर समस्याएँ पैदा करते हैं। उच्च तापमान डेंगू जैसे संक्रामक रोगों के प्रसार को बढ़ावा देते हैं। मानवीय गतिविधि प्रजातियों, आवासों तथा जैव–विविधता के विलुप्त होने का कारण बन रही है। परागण जैसी प्राकृतिक प्रक्रियाओं का संतुलन पारिस्थितिकी तंत्र तथा मानव अस्तित्व के लिए अनिवार्य है, किन्तु मानवीय गतिविधि इसे खतरे में डाल रही है।

हमारे दैनिक जीवन में परिवर्तन तथा सरकार की गतिविधियों की आवश्यकता बढ़ रही है। मीडिया के माध्यम से पर्यावरणीय जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। पर्यावरणीय सुरक्षा राजनीतिक सुरक्षा में सुधार ला सकती है। पर्यावरणीय मुद्‌दों को सुरक्षा का रूप देने के लिए उच्चतम राजनीतिक स्तर पर तत्काल प्रतिक्रिया आवश्यक है। यदि ये निम्न स्तर की राजनीति का हिस्सा बन गए तो पर्यावरणीय चिंताएँ राज्यों तथा अन्य संस्थाओं की सुरक्षा को कमजोर कर सकती हैं। राजनीतिक नेताओं को सबसे पहले यह स्वीकार करना चाहिए कि पर्यावरणीय समस्याएँ तथा उनके सामाजिक–आर्थिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव देश के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। फिर उन्हें राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ–साथ राज्य की प्रशासनिक तथा कानूनी क्षमता का उपयोग करके इन समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करना चाहिए।

भारत पर्यावरण से संबंधित अंतरराष्ट्रीय संगठनों का सक्रिय सदस्य है। यू0एन0ई0पी0 के अंतर्गत कई कार्यक्रम चल रहे हैं। सरकार ने हाल ही में पर्यावरणीय गुणवत्ता सुधार के लिए नियामक तथा आर्थिक उपकरणों के संयुक्त उपयोग पर जोर देना शुरू किया है। पर्यावरणीय गुणवत्ता के उचित प्रबंधन तथा देश में सतत विकास प्राप्त करने के लिए सरकारी एजेंसियों, एनजीओ तथा जनता के बीच समन्वय आवश्यक है। अंतरराष्ट्रीय ट्रेड यूनियनों, व्यवसाय नेताओं तथा नियोक्ता संगठनों ने विकास के आर्थिक व सामाजिक आयामों को इन अंतरराष्ट्रीय चर्चाओं से जोड़ने का प्रयास किया है। यदि मानव भविष्य की ओर इसी हानिकारक तरीके से बढ़ता रहा तो विचार करने योग्य कोई भविष्य नहीं बचेगा। अपने स्थानीय समुदाय तथा परिवारों में इन मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ाकर हम एक अधिक पर्यावरण–सचेत तथा अनुकूल स्थान बनाने में अपना योगदान दे सकते हैं। पर्यावरणीय मुद्दों को राजनीतिक स्तर पर प्राथमिकता देना अनिवार्य है । राजनीतिक नेतृत्व को यह स्वीकार करना चाहिए कि पर्यावरणीय समस्याएं देश के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकारी एजेंसियों, गैर–सरकारी संगठनों और जनता के बीच समन्वय की आवश्यकता है। यदि हम इसी हानिकारक तरीके से आगे बढते रहे, तो भविष्य सुरक्षित नहीं रहेगा। अपने परिवारों और समुदायों में जागरूकता बढ़ाकर ही हम एक पर्यावरण–अनुकूल दुनिया के निर्माण में योगदान दे सकते हैं।

यह पेपर/शोध पत्र मूल कार्य का हिंदी अनुवाद है।
अनुवादकः–
लेखक स्वयं (Dr.Vijay Kumar) द्वारा किया गया स्व–अनुवाद (Self-translation) **Original Title:** Environmental Challenges and Human Security in a Global Context **Original Publication:** Book Chapter in *Global Environment & Sustainable Development*, Edited by Dr. Arvind Kumar Shukla, Published by Book Publication, Lucknow, First Edition 2017, pp. 63-69, ISBN: 978-93-85420-19-1.
Original Author: Dr. Vijay Kumar